eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

सर्वोदय और सामाजिक न्याय

[1]डॉ0 बिपिन कुमार शुक्ल

[1]एसो0प्रो0–राजनीति विज्ञान फ0अ0अ0 राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, महमूदाबाद (सीतापुर) उ0प्र0

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

वर्तमान भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर जातिवाद, संप्रदायवाद और क्षेत्रीयतावाद आदि के बढ़ते प्रभाव ने मानव और मानव कल्याण केंद्रित राजनीति के विचार को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया है। फलस्वरूप सामाजिक न्याय का वह विचार भी नेपथ्य में चला गया जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति खासकर सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को केंद्र में रखकर संसाधनों के वितरण की बात करता है। इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया ने समाज में जिस आर्थिक खाईं को जन्म दिया उसमें समाज के अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति और समूहों की स्थिति निरंतर बद से बदतर होती गई। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सर्वोदय के विचार और सामाजिक न्याय स्थापित करने में उसकी उपादेयता पर विचार करना है।

शब्द पूंजीः– सर्वोदय ,सामाजिक न्याय, साम्यवाद,उदारवाद ,आर्थिक खाईं, श्रेणी समाजवाद, फेबियन समाजवाद आदि।

Introduction

महात्मा गांधी 20 वी शताब्दी के सबसे बड़े महानायक थे। सत्य और अहिंसा से अनुप्रेरित उनका संपूर्ण जीवन दर्शन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है ।उन्होंने अपना सारा जीवन राजनीति में रहकर एक सन्यासी की तरह जिया ।वह वास्तव में निष्काम कर्मयोगी थे। यही कारण है रविंद्र नाथ टैगोर उन्हें 'महात्मा' और प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने उनको 'फरिश्ता' कहा।

महात्मा गांधी भारत में सत्य और अहिंसा पर आधारित एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें संघर्ष के स्थान पर सहयोग, विषमता के स्थान पर समता और जहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण ना हो। सामाजिक व्यवस्था संबंधी गाँधी के अपने इस विचार को सर्वोदय की संज्ञा दी जाती है। गांधीजी ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग जॉन रस्किन की विख्यात पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट'का सार प्रकट करने के लिए किया । गांधी के अनुसार सब की भलाई में ही अपनी भलाई है सबको आजीविका का समान अधिकार है, सभी कामों की कीमत एक चीज होनी चाहिए।वह 'अधिकतम लोगों का अधिकतम हित'के सिद्धांत को गलत मानते हैं ।उनका मानना है कि हमारा ध्येय सभी का अधिकतम हित होना चाहिए। गांधी की मृत्यु के पश्चात उनके प्रमुख शिष्य आचार्य विनोबा भावे ,आचार्य कृपलानी, दादा धर्माधिकारी, काका कालेकर और जयप्रकाश नारायण ने विशेष रूप से अहिंसात्मक साधनों द्वारा एक सर्वोदय समाज की स्थापना की दिशा में व्यापक प्रयास किए।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

सर्वोदय एक विचारः

साधारण शब्दों में सर्वोदय का अर्थ है –सब का उदय। समन्वयात्मक प्रवृत्ति सर्वोदय की सबसे बड़ी विशेषता है । यह सभी विचारों के अच्छे अंश को ग्रहण करता है और दोषों को छोड़ देता है। सर्वोदय का विचार संपूर्ण सृष्टि ,जिसका मानव अंग है,की एकता में विश्वास रखता है और इसलिए यह नहीं मानता है कि व्यक्तियों, समूहों ,वर्गों और राष्ट्रों के हित परस्पर विरोधी हो सकते हैं ।सर्वोदय का कार्य इन हितों में एकता और विश्वास पैदा करना है।

आर पी मसानी के शब्दों में ''सर्वोदय समाज के पुनरुत्थान का अद्वितीय मानवीय प्रयास है।'' गांधी का सर्वोदय 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे भवंतु निरामया' के भारतीय दर्शन पर आधारित है। सर्वोदय समाज राज्य के सभी व्यक्तियों के विकास पर जोर देता है ।वह जाति ,धर्म ,रंग, लिंग, शक्ति और योग्यता आदि किसी प्रकार के भेदभाव के बगैर सभी व्यक्तियों का उत्थान और कल्याण चाहता है। दादा धर्माधिकारी के शब्दों में ,''सर्वोदय ऐसे वर्ग विहीन, जाति विहीन , शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर उपलब्ध होंगे। यह अहिंसा और सत्य द्वारा ही संभव है।''

आचार्य विनोबा भावे का अभिमत है कि ''सर्वोदय कुछ का, बहुतों का या अधिकतम का उत्थान नहीं चाहता है। यह अधिकतम के अधिकतम सुख से संतुष्ट नहीं है। यह तो एक की और सब की, ऊंचे की और नीचे की, सबल की और निर्बल की, बुद्धिमान की और बुद्धिहीन की भलाई से ही संतुष्ट हो सकता है।''

सर्वोदय समाज के सभी व्यक्तियों का कल्याण चाहता है चाहे वह मजदूर और किसान हो या फिर पूंजीपति क्योंकि पूरे समाज के विकास से ही राष्ट्र का विकास संभव है। इस प्रकार सर्वोदय साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों विचारधाराओं से अलग है । साम्यवाद जहां सर्वहारा के विकास की बात करता है और पूंजीवाद पूंजीपतियों के हित की, वही सर्वोदय सर्व हित की बात करता है। सर्वोदय विचारधारा के अनुसार जहां निर्धन व्यक्ति आर्थिक रूप से दरिद्र हैं वही अमीर व्यक्ति नैतिक रूप से दरिद्र हैं । विनोवा के शब्दों में, ''धनी लोग बहुत पहले से गिरे हुए हैं और निर्धन लोग कभी उठे नहीं परिणाम यह है कि हमें दोनों को ही उठाना है।''

सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए सर्वोदय साम्यवादियों की भांति वर्ग संघर्ष पर जोर न देकर सामान्य कल्याण और सामंजस्य पर बल देता है। गांधी सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए 'ट्रस्टीशिप और दरिद्र नारायण की सेवा का विचार प्रस्तुत करता है।समाज में विद्यमान असमानता को दूर करने और सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख लक्ष्य एवं साधन के रूप में सर्वोदय अनिवार्य रूप से अहिंसक शोषण मुक्त और सहकारिता पर आधारित समाज की स्थापना के लिए संकल्पित है ।सर्वोदयी परिवर्तन को एक त्रिकोणात्मक प्रक्रिया को स्वीकार करते हैं जिसमें हृदय परिवर्तन, विचार परिवर्तन और परिस्थिति परिवर्तन का विचार सम्मिलित है। एक सर्वोदयी के लिए परिवर्तन का अभिप्राय जीवन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

मूल्यों के परिवर्तन से है और जीवन मूल्यों में अपघटित परिवर्तन के माध्यम से ही संपूर्ण परिवर्तन को जन्म दिया जा सकता है।

आर्थिक क्षेत्र में सर्वोदय सादा जीवन, विकेंद्रीकरण, स्वावलंबन और सहयोग के आधार स्तंभों पर खड़ा है । वहीं राजनीतिक क्षेत्र में सर्वोदय समाज में स्त्री– पुरुष समानता, शोषण और आर्थिक विषमताओं की समाप्ति और ऊंच–नीच पर आधारित भेद बिना एक सहयोगी समाज की स्थापना करना चाहता है सर्वोदय वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली में सत्ता प्राप्ति हेतु राजनीतिक दलों के मध्य चल रही गला काट प्रतियोगिता के भी विरोध में है। 1975 में विनोबा भावे ने पवनार आश्रम में सर्वोदय कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए सर्वोदय के पांच आधारभूत सिद्धांत की व्याख्या की थी जो इस प्रकार हैं:

1–जाति एवं वर्गविहीन समाज की स्थापना,
2–सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ और कुशल प्रशासन,
3– सामाजिक व्यवस्था का आधार विकेंद्रीकरण,
4–समस्त शक्ति का उद्‌गम जनता में निहित होना और
5–अधिकारी वर्ग जनता का स्वामी नहीं जनता का सेवक है।

सर्वोदय और अन्य विचार धाराएं:

सर्वोदय मार्क्सवाद ,श्रम संघवाद, श्रेणी समाजवाद व ब्रिटिश फेबियनवाद जैसी समाजवादी विचारधारा से पूर्णतया भिन्न है । यह विचार धाराएं केवल श्रमजीवी वर्गों के हितों पर जोर देती हैं और इस लक्ष्य की प्राप्ति पूंजीपति वर्ग की कीमत पर करने की आकांक्षी हैं । लेकिन सर्वोदय यह मानकर चलता है इस प्रकार का कोई भी वर्गभेद समाज और सामाजिक जीवन के लिए अस्वाभाविक है। मार्क्सवाद मनुष्य को मूलतः एक भौतिक प्राणी मांगते हुए उसकी आध्यात्मिक मूल्यों को अस्वीकार करता है जबकि सर्वोदय मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में विश्वास करता है । सर्वोदय संघर्ष के स्थान पर सहयोग और प्रेम की भावना को प्रबल करना चाहता है। वहीं श्रम संघवाद मुख्य रूप से औद्योगिक समाजों में श्रमिकों के हितों और सत्ता में उनकी भागीदारी की वकालत करता है। इसका मुख्य केंद्र बिंदु औद्योगिक समाजों में श्रमिकों हेतु वेतन निर्धारण, कार्यस्थल की बेहतर परिस्थितियों की उपलब्धता और श्रमिक वर्ग के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य के साथ–साथ पूंजीगत लाभांश में भागीदारी की भी मांग करता है। फेबियन समाजवाद जहां लोकतांत्रिक माध्यमों से समाज में परिवर्तन लाते हुए एक समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहता है लेकिन इसके लिए वह व्यक्ति के बलिदान का विरोध नहीं करता। वही सर्वोदय का लक्ष्य समाज में सब के उत्थान का है और अपनी इसी विशेषता के कारण वह उपयोगितावाद से भी श्रेष्ठ हो जाता है जो अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख की कामना पर आधारित है।

सामाजिक न्याय एक संकल्पना:

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

सामाजिक न्याय की अवधारणा एक क्रांतिकारी अवधारणा है जो शोषित, पीड़ित ,दलित, वंचित, पिछड़े और कमजोर वर्ग का उत्थान करते हुए समाज में व्याप्त विषमता को दूर करना चाहती है। सामाजिक न्याय का विचार समाज में एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना का मानदंड है जिसमें समाज का प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से भागीदारी निभा सके और आर्थिक विकास के लाभों में समान रूप से हिस्सा प्राप्त कर सके। सामाजिक न्याय की अवधारणा का उदय मुख्य रूप से उदारवादी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की उन खामियों के विरुद्ध हुआ जिनके चलते वह साधन संपन्न और साधन हीन के मध्य दूरी को पाटने में असमर्थ रहा। सामाजिक न्याय न केवल रंग, लिंग, शक्ति, हैसियत और धन की असमानता को दूर करता है बल्कि समाज के वंचित और कमजोर वर्ग के लिए सामाजिक भौतिक और आर्थिक संसाधनों के उचित वितरण और विधि के शासन की अर्थपूर्ण स्थापना की मांग करता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक न्याय का विचार अनुपातिक समानता के विचार को स्वीकार करता है जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति समाज में एक समान मूल्यों का संपादन नहीं करता। आत : व्यक्तियों द्वारा समाज में किए जा रहे कार्यों के मूल्यों के अनुपात में ही वितरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए लेकिन अनुपातिक समानता के साथ–साथ सामाजिक न्याय इस बात पर भी बल देता है कि समाज में कमजोर और वंचित वर्ग अपनी सीमित क्षमताओं के कारण यदि समृद्ध और सुविधा संपन्न वर्ग के साथ प्रतियोगिता करने में अक्षम है तो राज्य को कमजोर और पिछड़े वर्ग को संरक्षण देकर उसे संपन्न वर्ग के साथ प्रतियोगिता के लिए सक्षम बनाया जाए।

सर्वोदय और सामाजिक न्यायः

उदारीकरण ,निजीकरण और वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति की पहचान और अस्मिता को संकटमय बना दिया है। ऐसी स्थिति में सर्वोदय का व्यावहारिक प्रयोग सामाजिक न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि सामाजिक न्याय और सर्वोदय दोनों का प्राथमिक उद्देश्य समाज के शोषित, पीड़ित, दलित ,वंचित, पिछड़े एवं कमजोर वर्ग का उत्थान करना है। इस दृष्टि से सर्वोदय और सामाजिक न्याय मौलिक रूप में सामान अवधारणाएं हैं क्योंकि दोनों का उद्देश्य शोषित पीड़ित दलित वंचित पिछड़े और कमजोर वर्ग का उत्थान करना है। सामाजिक दृष्टि से सर्वोदयी समाज का प्रमुख सिद्धांत समानता का सिद्धांत है। यह केवल समानता में विश्वास नहीं करता बल्कि विवेक पूर्ण समानता का समर्थक है। सर्वोदय के अनुयायी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि यद्यपि समाज में कुछ न कुछ तो अंतर बना रहेगा परंतु समाज में कोई ऊंच–नीच का भेद नहीं होगा तथा आर्थिक विषमता न्यून रूप में विद्यमान होगी ।समाज में स्त्री–पुरुष दोनों की भूमिका बराबर होगी ।सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त असमानता को दूर करने के लिए गांधी के छुआछूत विरोधी विचारों एवं प्रयासों को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया किया जाना चाहिए ।

समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए गांधी जी के ट्रस्टीशिप और दरिद्र नारायण के विचार को अमलीजामा पहनाना होगा। 'ट्रस्टीशिप'और 'दरिद्र नारायण' की पूजा का आदर्श अपनाकर हम नैतिक व आर्थिक दोनों प्रकार की दरिद्रता को दूर कर सकते हैं। समाज के आर्थिक

रूप से मजबूत पूंजीपति वर्ग को समाज के अन्य वर्गों के कल्याण लिए अपनी पूंजी के एक हिस्से को कमजोर वर्ग के कल्याण हेतु देना होगा।

सर्वोदय की विचारधारा स्वतंत्रता ,समानता ,न्याय और बंधुत्व को प्राथमिकता प्रदान करते हुए राज्य को मानवीय गुणों के विकास निमित्त उसके व्यक्तिगत जीवन में न्यूनतम हस्तक्षेप की बात स्वीकार करता है। गांधीजी ऐसे राज्य का समर्थन करते हैं जिसमें मनुष्य का स्वयं अपने ऊपर आंतरिक नियंत्रण और शासन होगा। गांधीजी सामाजिक न्याय के प्रबल समर्थक थे। उनका रामराज्य एक ऐसे सर्वोदय समाज की संकल्पना पर आधारित है जहां पिछड़े, कमजोर, अछूतों और दलितों के उत्थान को सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त है। गांधी के ही शब्दों में ''इस समाज में आखिरी व्यक्ति पहले व्यक्ति के बराबर होगा ...कोई व्यक्ति न तो पहला होगा और ना आखिरी... प्रत्येक पर खिले पूरा और बराबर का स्थान होगा।''

वर्तमान दौर में हमारा समाज वैश्वीकरण उदारीकरण और निजीकरण के राजनीतिक –आर्थिक परिदृश्य से गुजर रहा है और ऐसे मे उभरी उपभोक्तावादी संस्कृति में न केवल मानव जीवन वरन् उसकी पहचान और अस्मिता पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं। सामाजिक जीवन में व्याप्त आर्थिक एवं नैतिक भ्रष्टाचार को रोकने के लिए और उसके विरुद्ध कार्यवाही के लिए गांधी की चिरपरिचित सत्याग्रह की तकनीकी अत्यंत कारगर हो सकती है जहां अत्याचारी और भ्रष्टाचारी को अहिंसक सत्याग्रही तकनीकों के द्वारा सत्य का अभिज्ञान कराते हुए उसका हृदय परिवर्तन किया जा सकता है।

दलीय गुटबाजी पर आधारित आधुनिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में आज सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्षरत राजनीतिक दल विचारधारा और नैतिकता को तिलांजलि दे दे चुके हैं ।उनका एकमात्र उद्देश्य ऐन केन प्रकारेण सत्ता की प्राप्त कर दलगत स्वार्थों की पूर्ति करना मात्र रह गया है जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अत्यंत घातक है। ऐसी स्थिति में सर्वोदयी दलहीन तथा लोक शक्ति पर आधारित लोकतंत्र की स्थापना का प्रयास करना होगा। जयप्रकाश नारायण के शब्दों में ,''यह कैसा लोकतांत्रिक समाज होगा जिसमें प्रत्येक नागरिक श्रमिक होगा और प्रत्येक नर नारी में समानता उसका प्रमुख लक्षण होगा। बिना भेदभाव के सभी को उन्नति के समान अवसर और अधिकार उपलब्ध होंगे।

वर्तमान दौर में भारतीय राज्य व्यवस्था के समक्ष कुछ ऐसी चुनौतियां मुखरित हुई हैं जो शासन व्यवस्था के लिए अत्यंत खतरनाक साबित हो रही हैं। इनमें नक्सलवाद एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या के प्रधान मूल हमें भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक –आर्थिक विषमता में मिलते हैं।सर्वोदय की विचारधारा ऐसे आर्थिक रूप से विपन्न भूमिहीनों और निर्धनों को एक नवीन आशा की किरण दिखाती है। समाज के ऐसे लोगों को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने और उनके विकास के लिए सर्वोदय की विचारधारा पर आधारित प्रयास कारगर हो सकते हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

आर्थिक क्षेत्र में सर्वोदय के मूलभूत चार सिद्धांत हैं– सादा और सरल जीवन,विकेंद्रीकरण, स्वावलंबन और सहयोग ।आधुनिक दौर में बढ़ते हुए उपभोक्तावाद ने मानव मूल्यों को रसातल में ढ़केल दिया है। सर्वोदय विचारधारा एक सीमा से अधिक भौतिक वस्तुओं के अपरिग्रह पर बल देती है । इसी प्रकार बाजारीकरण के इस दौर में लघु और सीमांत किसान मजदूर और कुटीर उद्योग कामगारों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दीन –हीन होती जा रही है । ऐसे में समाज के इस वर्ग को अन्य सभी के साथ मुख्यधारा में लाने के लिए सर्वोदय की विकेंद्रीकरण की नीति को अपनाकर स्थानीय लघु एवं कुटीर उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। ध्यातव्य हो की सर्वोदय मूल उद्योगों में भारी उद्योगों का विरोध नहीं करता परंतु साथ ही साथ इस बात पर भी बल देता है कि समाज में औद्योगिक उत्पादन का केंद्रीकरण ना हो स्थानीय स्तर पर लघु और कुटीर दोनों को विशेष ध्यान देकर लघु कामगारों कारीगारों और हुनरमंदों को स्वावलंबी बनाया जा सके जाए।

संक्षेप में सर्वोदय के विचार को आधुनिक भारतीय समाज में व्याप्त असमानता को दूर करने के लिए तथा सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में अपनाया जा सकता है। यह एक ऐसा साधन है जो समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य सहयोग के माध्यम से एक ऐसे भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जहां प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और समूह बिना किसी भेदभाव के पारस्परिक सहयोग और सौहार्द के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में रहते हुए बेहतर जीवन स्तर को प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ सूचीः

1– विनोबा भावेः सर्वोदय के आधार
2– आर पी मसानीः दी फाइव गिफ्ट्स
3– बीपी वर्माः मॉडर्न इंडियन पॉलीटिकल थॉट्स
4– अवस्थी एवं अवस्थीः आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन
5– विनोबाः सर्वोदय– विचार और स्वराज्य– शास्त्र
6– उषा मेहताःभारतीय राजनीतिक चिंतन को बिनोवा बिनोवा की देन
7– जे बी कृपलानीः गांधी, हिज लाइफ एंड थॉट्स
8–ओ0पी0 गाबा : राजनीति विज्ञान की रुपरेखा